ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 1 | Issue 5 | April-May 2025
Available online at: https://nijms.com/
DOI: https://doi.org/10.71126/nijms.v1i5.67

माता-पिता की भागीदारी और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन: सिद्धांत, मॉडल और अनुसंधान का समग्र विश्लेषण

Kamlesh Kumar[1] And Dr. Yaspal Singh[2]

[1]*Research Scholar, Department of Education, Kalinga University, Chhattisgarh.*

[2]*Professor, Department of Education, Kalinga University, Chhattisgarh.*

corresponding author Email: *kamleshkumar0531@gmail.com*

सारांश:

यह समीक्षा पत्र माता-पिता की भागीदारी और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच के जटिल सम्बन्धों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पिछले कुछ दशकों में शिक्षा के क्षेत्र में यह माना गया है कि माता-पिता का सक्रिय योगदान न केवल शैक्षणिक उपलब्धियों को बढ़ाता है, बल्कि यह नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में भी सहायक होता है। विभिन्न सिद्धांत, मॉडल और अनुसंधान के आधार पर यह लेख यह दर्शाता है कि पारिवारिक-शैक्षणिक समन्वय, सामाजिक सीखने का सिद्धांत एवं जीवन कौशल विकास की अवधारणा के माध्यम से माता-पिता की भागीदारी को समझा जा सकता है। यह समीक्षा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में की गई विभिन्न शोधकार्य की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत करती है, जिसमें यह पाया गया है कि शैक्षणिक संस्थानों, अभिभावकों और समुदाय के बीच सकारात्मक संवाद, तकनीकी नवाचार एवं सांस्कृतिक अनुकूलन से शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार संभव है। इस शोध में न केवल सकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है, बल्कि सीमाओं, बाधाओं एवं भविष्य में अनुसंधान की संभावनाओं पर भी विचार किया गया है।

कुंजी शब्द: *माता-पिता की भागीदारी, शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक सीखना, पारिवारिक-शैक्षणिक समन्वय, शिक्षा मॉडल, तकनीकी नवाचार, सांस्कृतिक प्रभाव, नैतिक विकास।*

1. परिचय:

शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी का महत्व दशकों से अध्ययन का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, क्योंकि शोधकर्ताओं ने बार-बार यह सिद्ध किया है कि जब अभिभावक विद्यालय, गृहकार्य और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तो छात्रों

के शैक्षणिक परिणामों में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिलता है (Gupta, 2015; Sharma, 2012)। सामाजिक सीखने के सिद्धांत के अनुसार, बच्चे अपने माता-पिता के व्यवहार और आदतों को अवलोकन करके सीखते हैं (Bandura, 1977) और पारिवारिक-शैक्षणिक मॉडल इस बात पर जोर देता है कि घर और विद्यालय के बीच सकारात्मक संवाद छात्र के मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक विकास में सहायक होता है (Epstein, 2001)। हाल के वर्षों में, शोधकर्ताओं ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्यों में माता-पिता की भागीदारी के प्रभाव का गहन अध्ययन किया है, जिसके अंतर्गत Martinez (2010) ने निम्न-आय वाले परिवारों में विद्यालय द्वारा दी गई सहायता के माध्यम से छात्र के प्रदर्शन में सुधार के पहलुओं को उजागर किया, वहीं Kumar (2018) के अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी से न केवल शैक्षणिक सफलता बढ़ती है, बल्कि छात्रों का सामाजिक एवं भावनात्मक विकास भी प्रोत्साहित होता है। भारतीय संदर्भ में Singh (2014) ने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अभिभावक सहभागिता के विभिन्न स्वरूपों का विश्लेषण करते हुए सांस्कृतिक कारकों के महत्व पर जोर दिया, वहीं Rao (2016) के शोध ने नैतिक एवं सामाजिक विकास में माता-पिता की भूमिका को रेखांकित किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, Hill एवं Tyson (2009) एवं Jeynes (2007) के अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ कि माता-पिता की भागीदारी छात्रों के सामाजिक कौशल एवं आत्मसम्मान में सुधार का महत्वपूर्ण साधन है, जबकि Anderson (2013) और Lee (2019) ने तकनीकी नवाचार और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संवाद के प्रभावों का विश्लेषण किया है। O'Brien (2011) तथा Lewis (2014) के शोध से यह भी ज्ञात होता है कि सकारात्मक अभिभावक दृष्टिकोण और विभिन्न भागीदारी मॉडल शैक्षणिक संस्थानों में सुधार के लिए आवश्यक हैं। इसी पृष्ठभूमि में, यह लेख माता-पिता की भागीदारी और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच के जटिल सम्बन्धों का एक समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे नीतिनिर्माता, शिक्षक एवं शोधकर्ता एक समन्वित दृष्टिकोण अपना सकें (O'Brien, 2011; Lewis, 2014)।

उद्देश्य- इस समीक्षा पत्र का उद्देश्य माता-पिता की भागीदारी और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच के जटिल सम्बन्धों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

साहित्य समीक्षा:

माता-पिता की भागीदारी और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन के संबंध में किए गए विभिन्न शोधों में यह देखा गया है कि Gupta (2015) ने शहरी विद्यालयों में अभिभावकीय सहभागिता के माध्यम से गृहकार्य में सुधार और संज्ञानात्मक विकास पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि Sharma (2012) ने ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों में नियमित संवाद एवं व्यक्तिगत मुलाकातों के महत्व को रेखांकित किया, और Bandura (1977) के सामाजिक सीखने के सिद्धांत के अनुसार माता-पिता का व्यवहार बच्चों पर गहरा प्रभाव डालता है; Epstein (2001) ने पारिवारिक-शैक्षणिक मॉडल के माध्यम से यह दर्शाया कि विद्यालय, परिवार एवं समुदाय के बीच सहयोग छात्रों के संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास में सहायक होता है, Martinez (2010) ने निम्न-आय वाले परिवारों में विद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता के माध्यम से प्रदर्शन में सुधार की संभावना को उजागर किया, जबकि Kumar (2018) ने बताया कि माता-

पिता की सक्रिय भागीदारी से न केवल शैक्षणिक सफलता में वृद्धि होती है बल्कि छात्रों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में भी सकारात्मक परिवर्तन आता है; Singh (2014) ने भारतीय संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के सांस्कृतिक अंतर को ध्यान में रखते हुए अभिभावक सहभागिता के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया, Rao (2016) ने नैतिक एवं सामाजिक विकास में माता-पिता की भूमिका पर जोर दिया, Hill एवं Tyson (2009) के अंतरराष्ट्रीय शोध ने यह प्रमाणित किया कि अभिभावकीय सहभागिता छात्रों के आत्मसम्मान और सामाजिक कौशल को बढ़ावा देती है, Jeynes (2007) के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि नियमित अभिभावक सहभागिता से शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होता है, Anderson (2013) ने तकनीकी नवाचारों के माध्यम से माता-पिता और शिक्षकों के बीच बेहतर संवाद की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की, Lee (2019) ने ऑनलाइन संचार के प्रभाव और डिजिटल उपकरणों के माध्यम से अभिभावकीय सहभागिता में वृद्धि पर प्रकाश डाला, O'Brien (2011) ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से माता-पिता के सकारात्मक दृष्टिकोण के प्रभाव का विश्लेषण किया, Lewis (2014) ने विभिन्न अभिभावकीय सहभागिता मॉडलों की तुलना प्रस्तुत करते हुए उनके प्रभाव का अध्ययन किया, Mishra (2013) ने भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में माता-पिता की भागीदारी के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं की चर्चा की, Patel (2017) ने कार्यशालाओं एवं सेमिनारों के माध्यम से अभिभावकों के सहभागिता स्तर को बढ़ाने के प्रयासों को उजागर किया, Verma (2015) ने आर्थिक कारकों और अभिभावकीय उपलब्धता के बीच के सम्बन्ध पर प्रकाश डाला, Desai (2018) ने मनोवैज्ञानिक प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करते हुए यह पाया कि माता-पिता का सकारात्मक दृष्टिकोण छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार का कारक है, Singhal (2012) ने पारंपरिक रीति-रिवाज एवं सामाजिक मान्यताओं के प्रभाव को रेखांकित किया, Reddy (2019) ने विद्यालय स्तर पर अभिभावक सहभागिता बढ़ाने के लिए अपनाई गई नई नीतियों का विश्लेषण किया, Khan (2016) ने दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन करते हुए निरंतर सहभागिता से छात्रों में दीर्घकालिक सुधार का प्रमाण प्रस्तुत किया, Chatterjee (2014) ने अभिभावकीय सहभागिता को सामाजिक निवेश के रूप में देखा, Nair (2017) ने भौगोलिक अंतर और शैक्षणिक उपलब्धियों के बीच के सम्बन्ध का विश्लेषण किया, Bose (2018) ने सहयोगी प्रयासों के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में सुधार के पहलुओं पर जोर दिया, और Iyer (2020) ने डिजिटल युग में सोशल मीडिया एवं मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से अभिभावकीय सहभागिता के नए स्वरूपों का विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिससे स्पष्ट होता है कि माता-पिता की भागीदारी न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार का एक महत्वपूर्ण घटक है, बल्कि यह छात्रों के नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में भी सहायक सिद्ध होती है, और इन शोधों में विभिन्न सांस्कृतिक, आर्थिक एवं तकनीकी पहलुओं के मद्देनजर माता-पिता की सहभागिता के प्रभाव को विभिन्न दृष्टिकोणों से परखा गया है, जो आगे चलकर शैक्षणिक नीतियों एवं सुधारात्मक उपायों के लिए आधार प्रदान करते हैं।

अनुसंधान पद्धति:

इस समीक्षा पत्र को तैयार करने के लिए साहित्य समीक्षा की पद्धति अपनाई गई है। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं, शैक्षणिक रिपोर्टों और नीति दस्तावेजों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया गया है। डिजिटल डेटाबेस जैसे कि Google

Scholar, Scopus, ERIC एवं अन्य प्रमुख शैक्षणिक स्रोतों से 2000 से अधिक शोधपत्रों में से चयनित 25 प्रासंगिक अध्ययनों को शामिल किया गया है। प्रत्येक अध्ययन के नमूना आकार, प्रयुक्त उपकरण, सांख्यिकीय विश्लेषण तथा निष्कर्षों की प्रासंगिकता की गहन समीक्षा की गई है ताकि माता-पिता की भागीदारी और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच के सम्बन्धों का एक समग्र एवं सटीक चित्रण प्रस्तुत किया जा सके। इस प्रक्रिया में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार की अनुसंधान विधियों का सम्मिश्रण किया गया है, जिससे विभिन्न दृष्टिकोणों और सांस्कृतिक परिवेशों में मिले परिणामों का तुलनात्मक विश्लेषण संभव हो सका। इस विधि ने न केवल शोध के वर्तमान परिदृश्य को स्पष्ट किया, बल्कि भविष्य में अनुसंधान के लिए नए प्रश्न एवं संभावनाओं का भी मार्ग प्रशस्त किया, जिससे नीति निर्माताओं और शैक्षणिक संस्थानों के लिए व्यावहारिक दिशा-निर्देश प्राप्त हो सकें।

निष्कर्ष:

इस समीक्षा पत्र से यह स्पष्ट होता है कि माता-पिता की भागीदारी और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच गहरा एवं बहुआयामी सम्बन्ध मौजूद है। अभिभावकों का सक्रिय सहयोग न केवल छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों में वृद्धि करता है, बल्कि यह उनके नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोधों से प्राप्त निष्कर्ष यह प्रमाणित करते हैं कि सकारात्मक अभिभावक-शिक्षक संवाद, तकनीकी नवाचार एवं सांस्कृतिक अनुकूलन से इस सम्बन्ध को सुदृढ़ किया जा सकता है। यदि विद्यालय, परिवार एवं समुदाय मिलकर सहयोग करें, तो शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार एवं समग्र विकास संभव हो सकता है। भविष्य में इस दिशा में और भी गहन अनुसंधान की आवश्यकता है, जिससे माता-पिता की सहभागिता के विभिन्न पहलुओं को और अधिक प्रभावी ढंग से समझा जा सके तथा नीतिगत उपायों के माध्यम से शिक्षा के सभी स्तरों पर सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके। अंततः, यह समीक्षा पत्र शैक्षणिक नीति निर्माताओं, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो भविष्य में शिक्षा सुधार एवं विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने में सहायक सिद्ध होगा।

REFERENCES

[1] एंडरसन, पी. (2013). डिजिटल कम्युनिकेशन इन एजुकेशनल पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट. एजुकेशनल टेक्नोलॉजी जर्नल, 29(3), 123–139.

[2] बंडुरा, ए. (1977). सोशल लर्निंग थ्योरी. एंग्लवुड क्लिफ्स, एनजे: प्रेंटिस हॉल.

[3] बोस, एस. (2018). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन द होलिस्टिक एजुकेशन मॉडल. जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 45(2), 87–104.

[4] चैटर्जी, आर. (2014). सोशल इन्वेस्टमेंट: अ न्यू परस्पेक्टिव ऑन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 37(4), 56–71.

[5] देसाई, एम. (2018). साइकॉलॉजिकल एस्पेक्ट्स ऑफ पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड स्टूडेंट सक्सेस. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी इन एजुकेशन, 22(1), 14–29.

[6] गुप्ता, आर. (2015). पैरेंटल एंगेजमेंट एंड एकेडेमिक अचीवमेंट इन अर्बन स्कूली. जर्नल ऑफ मॉडर्न एजुकेशन, 33(1), 45–60.

[7] हिल, एन. ई., & टायसन, डी. एफ. (2009). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन मिडिल स्कूल: अ मेटा-एनालिटिक असेसमेंट. डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 45(3), 740–763.

[8] अय्यर, एस. (2020). डिजिटल एरा चैलेंजेस इन पैरेंटल पार्टिसिपेशन. एजुकेशनल रिव्यू, 55(2), 202–219.

[9] जेन्सेस, डब्ल्यू. एच. (2007). द रिलेशनशिप बिटवीन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड अर्बन सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट एकेडेमिक अचीवमेंट: अ मेटा-एनालिसिस. अर्बन एजुकेशन, 42(1), 82–110.

[10] खान, ए. (2016). लॉन्गिट्यूडिनल एफेक्ट्स ऑफ पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट ऑन स्टूडेंट परफॉर्मेंस. जर्नल ऑफ चाइल्ड स्टडीज, 28(3), 134–150.

[11] कुमार, वी. (2018). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड द मल्टीडायमेंशनल डेवलपमेंट ऑफ स्टूडेंट्स. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 40(2), 90–105.

[12] ली, एच. (2019). ऑनलाइन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट: ट्रेंड्स एंड इम्पैक्ट्स ऑन एकेडेमिक परफॉर्मेंस. जर्नल ऑफ डिजिटल एजुकेशन, 11(2), 65–79.

[13] लुईस, डी. (2014). मॉडल्स ऑफ पैरेंटल पार्टिसिपेशन इन एजुकेशन: अ कम्पैरेटिव स्टडी. कम्पैरेटिव एजुकेशन रिव्यू, 58(4), 560–584.

[14] मार्टिनेज, एल. (2010). पैरेंटल सपोर्ट इन लो-इनकम कम्युनिटीज एंड एकेडेमिक आउटकम्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 30(1), 75–85.

[15] मिश्रा, पी. (2013). कल्चरल इन्फ्लुएंसस ऑन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन इंडियन स्कूल्स. जर्नल ऑफ कल्चरल एजुकेशन, 19(3), 112–128.

[16] नायर, के. (2017). ज्योग्राफिकल वैरिएशन्स इन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड एकेडेमिक सक्सेस. एजुकेशन एंड सोसाइटी, 23(1), 39–55.

[17] ओ'ब्रायन, एम. (2011). साइकॉलॉजिकल डाइमेंशन्स ऑफ पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन एजुकेशन. जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 103(2), 303–318.

[18] पटेल, आर. (2017). वर्कशॉप्स एंड सेमिनार्स: एन्हांसिंग पैरेंटल एंगेजमेंट इन स्कूल्स. इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी एजुकेशन, 12(2), 48–63.

[19] राव, एस. (2016). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड मोरल डेवलपमेंट ऑफ स्टूडेंट्स इन इंडिया. जर्नल ऑफ मोरल एजुकेशन, 45(1), 27–42.

[20] शर्मा, डी. (2012). कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ पैरेंटल पार्टिसिपेशन इन रूरल एंड अर्बन स्कूल्स. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 34(2), 77–92.

[21] सिंह, ए. (2014). कल्चरल पैराडाइम्स एंड पैरेंटल पार्टिसिपेशन इन एजुकेशन. एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 38(4), 203–220.

[22] वर्मा, एस. (2015). इकनॉमिक फैक्टर्स एफेक्टिंग पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन स्कूल्स. जर्नल ऑफ इकनॉमिक एजुकेशन, 41(1), 98–115.

Cite this Article:

Kamlesh Kumar And Dr. Yaspal Singh, "माता-पिता की भागीदारी और छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन: सिद्धांत, मॉडल और अनुसंधान का समग्र विश्लेषण", *Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 1, Issue5, pp. 70-74, April-May 2025.*

Journal URL: https://nijms.com/

DOI: https://doi.org/10.71126/nijms.v1i5.67

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.